

संपादकीय

कनाड़ा के ट्रक चालक और भारत के किसान आंदोलन की समानता

कनाडा के ट्रक चालक और दिल्ली के किसान आंदोलन में काफी कुछ एक जैसा ही है। ये ट्रक चालक अपनेट्रुअपने ट्रक लेकर कनाडा की राजधानी ओटावा आए हैं। भारत में किसान अपने ट्रेकर लेकर दिल्ली पर चढ़ने के इरादे से आए थे। किसान भी लंबे समय रुकने के लिए खाने-पीने का सामान लेकर आए और एक साल रुके। ये ट्रक चालक भी रुकने की तैयारी के साथ आए हैं। कनाडा में पचास हजार के आसपास ट्रक चालकों ने प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो का निवास शनिवार को घेर लिया। वे अपने ट्रक साथ लिए हुए हैं। ये ट्रक चालक अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं। नारे लगा रहे हैं। वाहनों के हाँस बजा

रहे हैं। ये लंबे समय के प्रवास के इरादे से खाने-पीने का सामान लेकर राजधानी आए हैं। हालत इतनी खराब है कि राजधानी ओटावा के चारों ओर सतर मील तक जाम लगा हुआ है। शहरवासी परेशान हैं। ट्रक चालकों ने अपने करीब 70 किमी लंबे काफिले को 'फ्रीडम कान्वॉइंग' नाम दिया है। ट्रक वाले कनाडा के झंडे के साथ 'आजादी' की मांग वाले झंडे लहरा रहे हैं। वे पीएम ट्रूडो के खिलाफ जमकर नारेबाजी कर रहे हैं। आंदोलन को हजारों अन्य प्रदर्शनकारियों का भी साथ मिल रहा है। सड़कों पर हजारों की संख्या में बड़े-बड़े ट्रकों की आवाजें लगातार सुनाई दे रही हैं। ये ड्राइवर ट्रकों के हॉर्न लगातार बजाकर सरकार का विरोध कर रहे हैं। वे संसद के पास पहुंच गए हैं। हालत इतनी खराब है कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और उनके परिवार ने भारी विरोध प्रदर्शन की वजह से देश की राजधानी स्थित अपने आवास को छोड़ दिया है। वे किसी गुप्त स्थान पर जाकर छिप गए हैं। ये ट्रक चालकों को रोना वैकसीन जनादेश और अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिबंधों को समाप्त करने का विरोध कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि यह एक जंग है पर ट्रकों का दुनिया का सबसे बड़ा जमावड़ा है। खबरों के मुताबिक पूरे कनाडा से करीब एक सप्ताह की लंबी यात्रा करने के बाद ये विशालकाय ट्रक राजधानी ओटावा पहुंचे हैं। प्रदर्शन के आयोजकों ने जोर देकर कहा है कि यह आंदोलन शांतिपूर्ण होगा, पर इतनी भीड़ के सामने पुलिस लाचार नजर आ रही है। पुलिस ने कहा है कि वे इस संकट के लिए तैयार नहीं हैं। ट्रक चालकों में गुरुस्ता इस बात का भी है कि कुछ दिन पहले कनाडाई पीएम ने एक बयान में ट्रक वालों को 'महत्व नहीं रखने वाले अल्पसंख्यक' करार दिया था। पीएम ट्रूडो ने

कहा है कि द्रक वाले विज्ञान के विरोधी हैं। वे न केवल खुद के लिए बल्कि कनाडा के अन्य लोगों के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। शहर में स्थिति गंभीर हो गई है। आलम यह है कि ओटावा जाने वाले रास्ते पर द्रकों की 70 किमी तक लंबी कातार लग गई है जिसके कारण अन्य यात्रियों को भी आने-जाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। लगता है कि कनाडा सरकार ने इस आंदोलन को गंभीरता से नहीं लिया। एक सप्ताह पूर्व घले आंदोलनकारियों के द्रक राजधानी से पूर्व रोकने की व्यवस्था नहीं की गई। आंदोलन की गंभीरता नहीं समझी गई। काश सरकार पहले से सचेत होती तो हालात इतन खराब न होते। अभी एक साल पूर्व भारत में भी ऐसा ही प्रदर्शन हुआ था। पंजाब-हरियाणा और उत्तर प्रदेश के किसान दिल्ली के रास्तों पर धरना देकर बैठ गए थे। वे इस धरने के लिए अपने वाहन ट्रेक्टर आदि साथ लाए थे। लंबे समय रुकने के लिए उन्होंने यहां तंबू लगाए। स्टेज बनाई। याने पीने की सारी व्यवस्थाएं की उनकी सेवा के लिए समाजसेवी संगठन उत्तर आए। उन्होंने आंदोलन स्थलों पर जनसुविधाएं उपलब्ध कराई। चिकित्सा शिविर शुरू हो गए। भोजन के लिए भंडारें और लंगर शुरू हो गए। ये आंदोलन करीब एक साल चला। जब दिल्ली आंदोलन से जूझ रहा था, उस समय कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो इन किसानों का समर्थन कर रहे थे। किसान दिल्ली का आवागमन तो पूरी तरह नहीं रोक सके, पर इनके धरना स्थल से पहले से दिल्ली आने वालों को लंबा रास्ता तैकर आना पड़ा।

काफा परशाना उठाना पड़ा। किसाना ने कहा बार दिल्ला में प्रवेश का कोशिश की किंतु सरकार ने अनुमति नहीं दी। रास्तों पर बाढ़ लगादी इस आंदोलन के दौरान लालकिले जैसी कुछ अप्रिय घटनाएं भी हुईं। हालत यह हुई कि केंद्र को किसानों की मार्ग माननी पड़ी। तीनों कृषि कानून वापिस लेने पड़े। तीनों कृषि कानून वापसी की घोषणा खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को राष्ट्र के नाम संबोधन में करनी पड़ी थी। कनाडा के इस आंदोलन के हालात बता रहे हैं कि वहां के हालात किसान आंदोलन से ज्यादा खतरनाक हैं। भारत सरकार ने किसानों को दिल्ली बार्डर से आगे नहीं आना दिया था, जबकि कनाडा में ये आंदोलनकारी शहर में दायिल होकर संसद के पास पहुंच गए हैं। हालत इतने खराब है कि वहां के प्रधानमंत्री को परिवार सहित किसी गुप्त स्थान पर जाकर छिपना पड़ा है। कनेडा और दिल्ली के आंदोलन से सीख लेने की बात यह है कि अब दुनिया को अब ऐसी योजना बनानी होगी कि आगे से राजधानी का धेराव न हो। क्योंकि सरकार को झुकाने के इरादे से ऐसे आंदोलन आगे भी होंगे। अन्य देश में भी होंगे। कोई भी संगठन किसी भी देश के केंद्र की राजधानी के मार्ग कभी भी रोक सकता है। राजधानी की आवाजाही बंद कर संसद आदि का आपूर्ति बंद कर सरकारों को मांग मानने को मजबूर कर सकता है। इसलिए केंद्र की राजधानी के विक्रीयकरण पर भी विचार किया जाना चाहिए। देश की राजधानी उसके कार्यालय एक शहर में न बनाकर अलग-अलग जगहों पर बनाए जाएं। महाभारत में समझौते के लिए कौरवों के पास कृष्ण गए थे उन्होंने मांग की थी कि पांच गांव दे दिए जाएं। उन्होंने गांव के नाम भी बताए थे। इस प्रस्ताव को दुर्योधन ने यह कह कर अस्वीकार कर दिया था कि ये पांच गांव मेरी राजधानी के चारों ओर हैं। आप जब चाहोंगे तक मेरे राज्य के रास्ते बंद कर दोगे। मुझे बिना लड़े ही हथियार डालने पर मजबूर कर दोगे। ऐसा ही प्राचीन काल में सुरक्षा के लिए बने किलों के साथ होता था। दुश्मन किले के आपूर्ति के रास्ते बंद कर देता था। मुझबरन लड़े से लड़े मुझबत किले के राजा को शस्त्र डालने पड़ते

या भजनपूर्ण बड़ से बड़ भजनपूर्ण कविता का दर्शन का संस्कृत छालान बढ़ा
ये। युद्ध की स्थिति में भी दुश्मन देश हमला करके एक बार में एक
जगह स्थित राजधानी का सब कुछ खत्म कर सकता है। इस सबको
रोकने के लिए राजधानी के विकेंद्रीकरण पर सोचना होगा। सोचना होगा
कि ऐसे आंदोलन में व्यवस्थाएं ठप्प न हो जाए। वैसे भी दिल्ली अब
राजधानी के लिए उपयुक्त नहीं लगती। क्योंकि ये देश के बीच में स्थित
नहीं हैं। दिल्ली जब राजधानी बनी थी। अब पाकिस्तान नहीं था। तिब्बत
भारत का हिस्सा था। नेपाल भारत का छोटा भाई जैसा था। अब उसकी
चीन के साथ नजदीकियां बढ़ रही हैं। इन सब हालात को देखते हुए
राजधानी के लिए नए सिरे से विचार करना होगा।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी अपने आप को बहुत चतुर व सक्रिय राजनीतिज्ञ दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। वह हर दिन अपने भाषणों और ट्वीट के माध्यम से अपना अद्भुत ज्ञान देने का नया प्रयास करते हुए दिखाई पड़ते हैं। कांग्रेस पार्टी के सभी नेता जो केवल जी हुजूरी के बल पर अपनी राजनैतिक दुकान चला रहे हैं वह उनकी हाँ में हाँ ही मिलाते रहते हैं जिसके कारण आज कांग्रेस पूरे देशभर से साफ होने के लिए तत्पर हो गयी है।

राहुल जब भी सदन में
बोलने खड़े होते हैं तो कोई न
कोई विवाद पैदा करते हैं
लेकिन इस बार का विवाद
कुछ अधिक ही खतरनाक है
और अब उन पर कड़ी
कार्यवाही का समय आ गया
है। राहुल गांधी अब भारत
को एक राष्ट्र भी नहीं मान
रहे हैं।

एक राष्ट्र भी नहीं मान रहे हैं। उनके कथनों से क्या देशवासी सहमत हो जायेंगे, संभवतः नहीं क्योंकि लोग राहुल को एक मूर्ख नेता मान रहे हैं। संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर लोकसभा में बहस चल रही है जिसमें कांग्रेस की ओर से बोलते राहुल गांधी ने जो भाषण दिया है उससे पता चल रहा है कि वह कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी व कांग्रेस पार्टी के लिए एक गंभीर लाइलाज बीमारी हो गये हैं और जब जब कांग्रेस उन्हें रीलांच करने का प्रयास करती है वह फिर से कांग्रेस को ही धड़ाम कर देते हैं। राहुल गांधी के भाषण से अब देश की जनता व प्रबुद्धवर्ग को केवल हंसी नहीं आती है बल्कि दुःख भी होता है दुख इसलिए होता है क्योंकि उनके भाषणों को चीन और पाकिस्तान में बैठे भारत विरोधी शत्रुओं द्वारा पसंद किया जाता है औ भारत के अंदर टुकड़े-टुकड़े गैंग व हम लेकर रहेंगे आजादी के नारे लगाने वाले लोगों को भी ये पसंद आता है।

A photograph of Rahul Gandhi, the president of the Indian National Congress party. He is seated at a podium, wearing a white kurta, and gesturing with his right hand while speaking. The background features the horizontal stripes of the Indian flag in red, white, and green. The lighting is bright, and the overall composition is a medium shot.

राहुल गांधी देश के नहीं लेकिन से टुकड़े-टुकड़े गैंग के नायक अवश्य बन चुके हैं। राहुल के इस बार सदन के भाषण से स्पष्ट है कि वह भारत के प्रति एक विकृत नफरत से भरे हुए हैं जो केवल भारत को बर्बाद होता हुआ और विदेशी सोच का गुलाम बनता हुआ देखना चाहती है। राहुल गांधी का भाषण हल्के में नहीं लिया जा सकता अपितु अब समय आ गया है कि समय रहते हुए उनके खिलाफ संविधान के दायरे में कड़ी कार्यवाही की जाये। राहुल गांधी का संसद में दिया गया भाषण भारतीय संस्कृति, सभ्यता व पहचान के खिलाफ है। राहुल गांधी का भाषण संसदीय मर्यादाओं का भी घोर उल्लंघन है। राहुल गांधी ने सर्वोच्च अदालत व चुनाव आयोग का अपमान किया है और अपने भाषण में उन्होंने पेगासस का भी उल्लेख कर दिया वह भी तब जबकि सुप्रीम कोर्ट की की निगरानी में एक कमेटी पूरे मामले की जांच कर रही है। राहुल गांधी का भाषण तब और अधिक गंभीर

चीन पाक दोस्ती पर ही नहीं अपितु देश के अंदर केंद्र व राज्य संबंधों पर भी बोले वह तो और भी अधिक खतरनाक था। केंद्र व राज्यों पर संबंध के विषय में उनके विचार भारतीय संविधान की मूल आत्मा पर करारा प्रहर है उन्होंने संसद की गरिमा और अधिकारों को तार-तार कर दिया है। राहुल गांधी ने कहा कि केंद्र राज्यों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता और उन्होंने बहुत ही चालाकी के साथ उन सभी राज्यों का अपमान कर डाला है जहां पर कांग्रेस की सरकारे नहीं है। वह अपने भाषण में केरल, राजस्थान की विचारधारा को बहुत अच्छा बता रहे हैं। वह तमिलनाडु की विचारधारा को भी अच्छा बता रहे हैं और फिर पंजाब के किसानों की बहादुरी की प्रशंसा करते हैं। उनके विचार से केवल इन्हीं राज्यों में प्यार है, धर्म है और संस्कृति है। वह कहते हैं कि केंद्र इन राज्यों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता अर्थात अपने कानूनों को नहीं लाद सकता। राहुल की नजर में भारत एक राष्ट्र नहीं अपितु कई राज्यों का एक समूह है और यही बयान बहुत ही आपत्तिजनक बयान है। राहुल गांधी के बयान के खिलाफ पूरे भारत में एक वैचारिक तूफान खड़ा होना चाहिए क्योंकि राहुल गांधी वास्तव में भारत की तुलना भूतपूर्व सोवियत संघ की तरह कर रहे हैं जो अपनी गलत वामपंथी नीतियों के कारण कई टुकड़ों में विभक्त हो गया। राहुल गांधी कह रहे हैं कि केंद्र राज्य में हस्तक्षेप नहीं कर सकता जबकि वास्तविकता यह है कि आज विगत 70 सालों की राजनीति में सबसे अधिक 93 बार राज्यों में हस्तक्षेप उनके स्वर्गीय नाना नेहरू जी से लेकर उनकी दादी श्रीमती इंदिरा गांधी सहित सभी कांग्रेसी प्रधानमंत्रियों के द्वारा की गयी है। राहुल गांधी की बात मानें तो देश को आजादी केवल और केवल नेहरू जी की वजह से मिली और उनकी दादी इंदिरा गांधी को 32 गोलियां मारी गई और उनके पिता राजीव गांधी को विस्पॉट से उड़ा दिया गया। उनकी नजर में पूरा राष्ट्र केवल इन्हीं तीन लोगों में समाया हुआ है और इन्हीं से विकसित व पल्लवित हुआ है। राहुल गांधी भाषण देते समय इतना बहक गये कि उन्होंने कहा कि न्यायपालिका, चुनाव आयोग और पेगासस ये वो माध्यम हैं जिनका इस्तेमाल प्रधनमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने लोगों की आवाज को दबाने के लिए किया। राहुल गांधी के न्यायपालिका पर दिया गया बयान बहुत धातक है, विगत सात वर्षों से देश की न्यायपालिका ने कई ने राफेल में घोटाले सहित कई दूसरी जनहित याचिकाओं को सिरे से खारिज कर दिया है जिसके कारण गांधी परिवार व झूठ पर आधारित जनहित याचिकाओं का काला करोबार करने वाले वकीलों की कमाई पर तुषारापात हो चुका है। पूरे देश ने देखा कि कोरोना काल की आड़ में देश का विकास रोकने के लिए किस प्रकार की विकृत याचिकाएं अदालतों में पेश की जाती रहीं।

अपनी जुबान से 'हाथ' को कमजोर कर रहे हैं राहुल गांधी

बसपा-कांग्रेस के मुस्लिम प्रत्याशियों से सपा गठबंधन को हो सकता है भारी नुकसान



दूसरे चरण के नामंकन की प्रक्रिया पूरी होने के साथ ही पहले-दूसरे चरण की कुल 113 विधानसभा सीटों पर प्रत्याशियों की तस्वीर भी साफ हो गई है। वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में 113 में से सर्वाधिक 91 सीटों पर भाजपा ने परचम लहराया था।

है। समाजवादी पार्टी इस पेंच को समझ रही है कि जिस तरह से बहुजन समाज पार्टी और आवैसी ने मुस्लिम प्रत्याशियों पर दांव लगाया है उससे भाजपा को बड़ा फायदा मिल सकता है। दो चरणों की नामांकन प्रक्रिया पूरी होने के साथ ही सभी सीटों पर जिस तरह की तस्वीर उभर कर सामने आ रही है, उससे सपा-रालोद गठबंधन की गणित

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जिस तरह से गैर भाजपा दलोंने ने बड़ी संख्या में मुस्लिम उम्मीदवारों पर दांव लगाया है, उससे भाजपा की बल्ले-बल्ले होते दिख रही है। भाजपा के रणनीतिकारों को लगता है कि जिस भी विधानसभा क्षेत्र में दो या तीन मुस्लिम प्रत्याशी होंगे, वहां भाजपा की रासाना हो सकती है, भाजपा को जो नुकसान किसान आंदोलन के चलते जाट वोटरों का नाराजगी से हो रहा है, भाजपा को उसकी भरपारा मुस्लिम वोटों के बंटने से हो सकता है। राजनीति के जानकार भी मानते हैं कि भले ही कोई दल यह दावा करें कि मुस्लिम वोट बैंक एक मुश्त उसके साथ है, लेकिन जो दूसरे दलों के मुस्लिम प्रत्याशी हैं वह अपनी पहचान के बल पर अच्छी खासें संख्या में मुस्लिम वोट तो करेंगे ही। बस यहीं से पश्चिमी उत्तर प्रदेश की चुनावी तस्वीर बदल सकती है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रथम चरण 58 में से 11 विधानसभा सीटों पर दो और तीन विधानसभा क्षेत्रों में तीन-तीन मुस्लिम प्रत्याशी हैं वहीं दूसरे चरण में आठ सीटों पर तीन-तीन और चार सीटों पर दो-दो मुस्लिम प्रत्याशी मैदान में

ने अपनी तुष्टिकरण की सियासत पर पर्दा डालने और चुनाव हिन्दू बनाम मुस्लिम वोटरों के बीच नहीं बढ़े, इसके लिए मुस्लिम प्रत्याशी काफी कम संख्या में उतरे थे, लेकिन बसपा और कांग्रेस ने बेहिसाब मुस्लिम उम्मीदवार मैदान में उतार कर चुनाव को दो वर्गों में बांट कर रख दिया है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश व ब्रज क्षेत्र की कई सीटों पर एआईएमआईएम (आल इंडिया मजलिस ए इतिहापद उल मुस्लिमीन) के मुस्लिम प्रत्याशी भी भाजपा के लिए वरदान सवित हो रहे हैं। क्योंकि मुस्लिम उम्मीदवारों से बसपा, कांग्रेस या ओवैसी की पार्टी को लाभ कम, भाजपा का फायदा ज्यादा होता दिख रहा है। जहां सपा ने मुस्लिम प्रत्याशी नहीं उतारे हैं, वहां कांग्रेस और बसपा के मुस्लिम प्रत्याशी मौजूद हैं, ऐसे में मुसलामनों का बड़ा धड़ा कांग्रेस/बसपा के मुस्लिम प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करके सपा को नुकसान पहुंचाते हुए दिख रहे हैं। दूसरे चरण के नामांकन की प्रक्रिया पूरी होने के साथ ही पहले-दूसरे चरण की कुल 113 विधानसभा सीटों पर प्रत्याशियों की तस्वीर भी साफ हो गई है। वर्ष

2017 के विधानसभा चुनाव में 113 में से सर्वाधिक 91 सीटों पर भाजपा ने परचम लहराया था। तब कांग्रेस के साथ गठबंधन कर चुनाव मैदान में उतरी सपा को यहां से 17 सीटों पर जहां सफलता मिली थी। कांग्रेस की झोली में सिर्फ दो सीटें आई थीं। बसपा भी दो और रालोद सिर्फ एक सीट पर सिमट कर रह गई थी। गैरतलब है कि सपा-रालोद गठबंधन ने जहां दोनों चरणों की 113 सीटों में से 32 पर ही मुस्लिम प्रत्याशी खड़े किए हैं, वहीं बसपा ने अंतिम समय तक प्रत्याशी बदलते हुए 39 मुस्लिम प्रत्याशी उतारे हैं। कांग्रेस ने भी 28 मुस्लिम उम्मीदवारों पर दाव लगाया है। प्रदेश भर में सिर्फ 100 प्रत्याशी उतारने की बात कहने वाली एआईएमआईएम के भी मुस्लिम उम्मीदवारों से किसी तरह के चमत्कार की उम्मीद नहीं दिखती। जानकारों का कहना है कि प्रथम दो चरणों के अंतर्गत आने वाली बुढ़ाना, लोनी, मुरादनगर, शिकारपुर, चरथावल, आगरा उत्तर, मीरापुर, छपरौली, नकुड़, गंगोह, बढ़ापुर, चांदपुर, नूरपुर, नौगांव सादात, असमोली, गुन्नौर, नवाबगंज, सहसवान, शेखुपुर और तिलहर जैसी सीटों पर गठबंधन के सामने मुस्लिम प्रत्याशी उतारने से मुस्लिम समाज के ज्यादा बोट बसपा को ही मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। दलितों में तकरीबन 55 प्रतिशत जाटव वोट का भी बड़ा हिस्सा मिलने से बसपा के इन सीटों पर फायदे में रहने का अनुमान लगाया जा रहा है। उन सीटों पर भी गठबंधन को कम फायदा होता दिख रहा है जहां पर सपा ने मुस्लिम प्रत्याशी तो उतारे हैं लेकिन उसके साथ ही बसपा, अपना दल (एस) व कांग्रेस आदि के भी मुस्लिम उम्मीदवार हैं। ऐसी सीटों पर मुस्लिम मतों के बिखराव की संभावना जताई जा रही है। बेट्ट, थानाभवन, सिवालखास, मेरठ दक्षिण, धौलाना, बुलंदशहर, कोल, अलीगढ़ शहर, नजीबाबाद, धामपुर, कांठ, ठाकुरद्वारा, मुरादाबाद नगर व ग्रामीण, कुंदरकी, स्वार, चमरब्बा, रामपुर, अमरोहा, संभल व मीरगंज आदि ऐसी ही सीटों मानी जा रही हैं। माना जा रहा है कि इन सीटों पर मुस्लिम मतों के बिखराव का सीधा फायदा भाजपा को हो सकता है।

मिडिल-वलाई

मंजर खान

मिडिल क्लास का होना भी किसी वरदान से कम नहीं है कभी बोरियत नहीं होती जिंदगी भर कुछ ना कुछ आफ्रत लगी ही रहती है। मिडिल क्लास वालों की इथित सबसे दयनीय होती है, न इन्हें तैमूर जैसा बचपन नसीब होता है न अबू जलोटा जैसा बुढ़ापा, फिर भी अपने आप में उलझते हुए व्यस्त रहते हैं। मिडिल क्लास होने का भी अपना फायदा है चाहे BMW का भाव बढ़े या AUDI का या फिर नया i phone लांच हो जाए, घंटा फर्क नहीं पड़ता। मिडिल क्लास लोगों की आधी जिंदगी तो झ़ज़रे हुए बाल और बढ़ते हुए पेट को रोकने में ही चली जाती है। इन घरों में पनीर की सब्जी तभी बनती है जब दुध गलती से फट जाता है और मिक्स-वेज की सब्जी भी तभी बनती हैं जब रात वाली सब्जी बच जाती है। इनके यहाँ पूर्टी, कॉल्ड ड्रिंक एक साथ तभी आते हैं जब घर में कोई बढ़िया वाला रिश्तेदार आ रहा होता है। मिडिल क्लास वालों के कपड़ों की तरह खाने वाले चावल की भी तीन वेराईटी होती हैं; डेली, कैजुल और पार्टी वाला। छानते समय चायपती को दबा कर लास्ट बून्द तक निचोड़ लेना ही मिडिल क्लास वालों के लिए परमसुख की अनुभुति होती है। ये लोग रुम फ्रेशनर का इस्तेमाल नहीं करते, सीधे अंगरबत्ती जला लेते हैं। मिडिल क्लास भारतीय परिवार के घरों में Get- together नहीं होता, यहाँ 'सत्यनारायण भगवान की कथा' होती है। इनका फैमिली बजट इतना सटीक होता है कि सैलरी अंगर 31के बजाय 1 को आये तो गुल्लक फोड़ना पड़ जाता है। मिडिल क्लास लोगों की आधी जिंदगी तो 'बहुत मह़ँगा है बोलने में ही निकल जाती है। इनकी 'भूख' भी होटल के रेट्स पर डिपेंड करती है, दरअसल मह़ँगे होटलों की मेन्यू बुक में मिडिल क्लास इंसान 'फूड-आइटम्स' नहीं बल्कि अपनी 'औकात' ढूँढ रहा होता है। इश्क मोहब्बत तो अमीरों के घोचलें हैं, मिडिल क्लास वाले तो सीधे 'ब्याह' करते हैं। इनके जीवन में कोई वैलेंटाइन नहीं होता।

‘जिम्मेदारियां’ जिंदगी भर बजरंग-दल सी पीछे लगी रहती हैं। मध्यम वर्गीय दूल्हा- दुल्हन भी मंच पर ऐसे बैठे रहते हैं मानो जैसे किसी भारी सदमे में हो। अमीर शादी के बाद हनीमून पे चले जाते हैं और मिडिल क्लास लोगों की शादी के बाद टैन्ट- बर्टन वाले ही इनके पीछे पड़ जाते हैं। मिडिल क्लास बंदे को पर्सनल बेड और रुम भी शादी के बाद ही अलॉट हो पाता है। मिडिल क्लास बस ये समझ लो कि जो तेल सर पे लगाते हैं वही तेल मुँह में भी रगड़ लेते हैं। एक सच्चा मिडिल क्लास आदमी गीजर बंद करके तब तक नहाता रहता है जब तक कि नल से ठंडा पानी आना शुरू ना हो जाए। रुम ठंडा होते ही AC बंद करने वाला मिडिल क्लास आदमी चंदा देने के वक्त नास्तिक हो जाता है और प्रसाद खाने के वक्त आस्तिक। दरअसल मिडिल-क्लास तो चौराहे पर लगी घण्टी के समान है, जिसे लूली-लंगड़ी, अंधी-बहरी, अल्पमत-पूर्णमत हर प्रकार की सरकार पूरा दम से बजाती है। मिडिल क्लास को आज तक बजट में वही मिला हैं जो अकसर हम मंदिर में बजाते हैं। फिर भी हिम्मत करके मिडिल क्लास आदमी की पैसा बचाने की बहुत कोशिश करता है लेकिन बचा कुछ भी नहीं पाता। हक्कीकत में मिडिल मैन की हालत पंगत के बीच बैठे हुए उस आदमी की तरह होती है जिसके पास पूँड़ी-सब्जी और बिरयानी चाहे इधर से आये, चाहे उधर से, उस तक आते-आते खत्म हो जाती है। मिडिल क्लास के सपने भी लिमिटेड होते हैं “ठंकी भर गई है, मोटर बंद करना है, गैस पर दूध उबल गया है, चावल जल गया है” इसी टाईप के सपने आते हैं।.. लेकिन मिडिल क्लास की जिंदगी में लाख शिकायतें होने के बावजूद दिलों में मोहब्बत सच्ची होती है ... आंखों में अपने रिश्तेदारों और बड़ों के लिए सच्चा प्यार होता है ।

आवश्यक सचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा है। अतः भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9811111715 से सम्पर्क करें।

कड़कड़ाती ठंड में मिलिंद सोमन ने 28 साल छोटी बीवी के साथ 3 डिग्री में नहाते हुए शेयर की तस्वीर

तस्वीर में अभिनेता मिलिंद सोमन



अपनी पत्नी अंकिता कोवर के साथ 3 डिग्री टेम्परेचर में नेचुरल हॉट स्प्रिंग पूल में नहाते दिख रहे हैं। मिलिंद सोमन और अंकिता कोवर की हॉट और सिजलिंग केमिस्ट्री लोगों को काफी पसंद आ रही है। कंटेंट सेक्शन दिल और पायर वाले दोनों से भर गया है। बालीनुड के सबसे फिट अभिनेताओं में शुभर मिलिंद सोमन जहाँ एक तरफ अपनी हॉटेनस की बजह से सुखियों में रहते हैं वही दूसरी तरफ अपने से 28 साल छोटी बीवी के साथ रोमांटिक अंदाज की बजह से भी खुद चर्चा में रहते हैं। हाल ही में उन्होंने अपनी पत्नी अंकिता कोवर के साथ एक हॉट तस्वीर

शेयर की। तस्वीर सोशल मीडिया पर अपनी हॉटेनस की बजह से सुखियों में रहते हैं वही दूसरी तरफ अपने से 28 साल छोटी बीवी के साथ रोमांटिक अंदाज की बजह से भी खुद चर्चा में रहते हैं। अपनी इंस श्रैवेक तस्वीर को शेयर करते हुए अभिनेता

मिलिंद सोमन ने कैप्शन में लिखा, #ThrowbackThursday दू आइसलैंड 2019 में नेचुरल हॉट स्प्रिंग पूल में, 3 डिग्री ठंडी हवा और 30 डिग्री गर्म पानी, मेरी और @ankita_earthy की यह तस्वीर एक है और हाल ही में सफ अली खान स्टारफिल्म शेफ में नजर आए।

मेरी गायकी किसी तरह का चमत्कार नहीं, सब ईर्ष्यर की इच्छा है: लता मंगेशकर

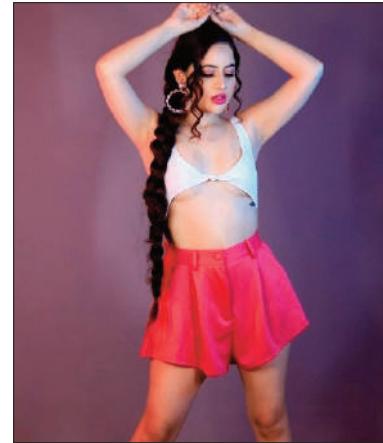
सुर सामाजी लता मंगेशकर ने एक समय कहा था कि उनकी गायिकी किसी तरह का चमत्कार या कोई असाधारण चीज़ नहीं है और जो कुछ है वह ईश्वर की इच्छा है क्योंकि कई ने उनसे बेहतर गाया, लेकिन उन लोगों को वह सब कुछ नहीं मिला 'जो मुझे मिला'। उनका यह भी मानना था कि किसी को सफलता को सिर पर छढ़ कर नहीं बोलने देना चाहिए। लता ने कहा था, "मैं ईश्वर की शुक्रगुरु हूं कि मेरी सफलता ने मुझ पर नुकसान देह प्रभाव नहीं डाला।" उन्होंने कहा था, "यदि मुझे कुदरत का ताहफा मिला है तो वह ईश्वर का ही आशीर्वाद है। किसने सोचा था कि मैं इन्हीं मशहूर हो जाऊँगी। ठीक है, मैं ग सकती हूं लेकिन मेरी गायिकी किसी तरह का चमत्कार नहीं है। मेरी गायिकी कोई असाधारण चीज़ नहीं है। कई लोगों ने मुझसे बेहतर गाया था लेकिन शायद उन्हें वह सब कुछ नहीं मिला जो मुझे मिला।" यह टिप्पणी 'लता मंगेशकर...इन हर आउन वंयस...' पुस्तक में की गई है जिसे टीवी कार्यक्रम निर्माता एवं लेखिका नसरीन मुनी कीवी ने लिखी है और जिसे 2009 में नियोजी बुक्स ने प्रकाशित किया था। लता का रिवायर सुवह मुंबई के एक अस्तालाल में निधन हो गया। वह 92 वर्ष की थी।

लता मंगेशकर को नम आंखों से प्रशंसकों ने दी विदाई, अमर रहें के लगाए नारे

मुंबई। लता मंगेशकर को दिक्षिण बंगलूरु में उनके आवास से शवाजी पार्क के लिए अंतिम विदाई के समय सुर सामाजी की आखिरी झलक पाने के लिए बेटाब प्रशंसकों की भी धूंधें इंतजार करती दिखी। इस दौरान लोगों ने सुर कौंकिला के गीतों को गाकर, नारे लगाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। सैकड़ों की तादाद में प्रशंसक, युवा और बुजुर्ग महान कलाकार को अंतिम सम्मान देने के लिए मंगेशकर के निवास प्रभु कुंज में उड़े, जिनकी मृत्यु कोविड-19 के बाद जिलताड़ों के चलाते रविवार को हुई। उनके कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया था। यातायात और मुंबई पुलस के कर्मियों की बड़ी संख्या में तैनाती की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके आवास के पास व्यस्त पेड़बुर रोड अवरुद्ध नहीं हो। गायिका को नम आंखों से विदाई देने के लिए मुंबई में दोपहर से ही सड़कों के किनारे प्रशंसक एकत्र होना शुरू हो गए थे। उनके आवास के समाने की गली "जब तक सूरज चंद्र रहेगा, लता दीदी का नाम रहेगा" और "लता दीदी अमर रहे" के नारों से गूँज उठी। सविता शाह (60) ने भीटीआई-से कहा, "आज सुबह जब मैं उठी तो मुझे बुरे खाल आने लगे। मैंने तुरंत उनके ठीक होने के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया।" मैं उनके निधन की खबर सुनकर टूट गई। (लता) दीदी ने मेरे जीवन को ही नहीं करोड़ों लोगों के जीवन को आकार दिया है।" शह सुबह-सुबह मंगेशकर के आवास के बाहर गुलाबउदी का गुरुदस्ता लेकर उन्हें श्रद्धांजलि देने पहुंची।

हाइट ब्रालेट में 'सब कुछ' रिवील करती दिखीं उर्फी जावेद

बिंग बॉस ओटीटी की कंटेस्टेट रह चुकीं उर्फी जावेद ब्रालेट सोशल मीडिया पर आकाशी एक्ट्रिक रहती है। उर्फी अपने फैशन सेस को लेकर उर्फी दुनियापर में मशहूर हैं। अपने फैशन को खुश करने के लिए वे आए दिन सोशल मीडिया पर अपनी फोटोज और वीडियोज शेयर करती रहती हैं। उर्फी अपने अतरंगी कपड़ों के कारण आए दिन ट्रोल भी होते रहती हैं। सोशल मीडिया पर उर्फी रिवीलिंग और छोटे कपड़ों में तस्वीरें डालती रहती हैं। हाल ही में उर्फी की लेस्ट्रेट फोटोज सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। बिंग बॉस ओटीटी फैशन का अंजीवांगरेब आटरफिल्स के प्रति ध्यार सभी को पता है। जब भी उर्फी को स्पॉट किया जाता है तो उनका आटरफिल्स सबका ध्यान अपनी ओर खींच लेता है। उर्फी जावेद अपने अतरंगी कपड़ों के कारण फिर से सुखिया



बटोरे रही है। इंटरनेट पर उर्फी की तवारें खूब वायरल हो रही हैं। हाल ही में उर्फी जावेद ने इंस्ट्राग्राम पर अपनी तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों

में उर्फी ने पिंक शॉट्स और ब्लॉक ब्रालेट पहनी हुई है। इन तस्वीरों में उर्फी की छोटी सभी का ध्यान खींच रही है। उर्फी की लंबी छोटी उनके लुक को काफी कॉम्प्लिमेंट कर रही है। पिंक लिपिस्टिक और पिंक हील्स के साथ उर्फी ने इस लुक को पूरा किया है। इस लुक में उर्फी ने एक से बड़कर एक कातिलाना पोज दिया है। इस लुक को हस्ताने के लिए उर्फी ने उसे बंद कर रहे हैं। तो वहीं कुछ इस तस्वीर के लिए उर्फी ट्रोल भी कर रहे हैं। उर्फी ने सब टीवी के शो सात फेरो की हेरा फेरी में कामिनी जोकी, कलस टीवी के शो बेपनाह में बेता कपूर, स्टार भारत के शो जिनी मां में पियाली और एंड टीवी के डायर में निदिनी की भूमिका निभाई। उर्फी जावेद को इंस्ट्राग्राम पर 2 12 मिनियन फॉलोवर्स फॉलो करते हैं।

'लग जा गले' से लेकर 'जिया जले' तक: ये हैं लता मंगेशकर के सर्वश्रेष्ठ 20 गाने

नवी दिल्ली। खुशी, दुख, देशभक्ति, उदासीनता, लुभाने या आनंद से भरने वाले : लता मंगेशकर ने विविध तरह की भावनाओं से ओतप्रोत गीतों को अपनी आवाज दी। महान गायिका लता मंगेशकर (92) ने रिवायर सुबह मुंबई के एक अस्तालाल में अंतिम सांस ली। मारी फिल्म 'किनी हासल' से 1960 में आयी फिल्म का यह गीत मीना कुमारी और राजकुमार पर फिल्माया गया और उसे मंगेशकर के सर्वश्रेष्ठ गानों में से एक माना जाता है।

4. 'ऐ मेरे बतन के लोगों' कवि प्रदीप का लियाया यह गीत उन भारतीय जवानों की स्मृति में गाया गया जिन्होंने 1962 के चीन-भारत युद्ध में सर्वोच्च बलिदान दिया था।

मंगेशकर ने 27 जनवरी 1963 में नेशनल स्टेटियम में तकालीन राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन और प्रधानमंत्री जवाहर लाल

नेहरू की मौजूदगी में यह गीत गाया था।

ऐसा बताया जाता है कि इस गीत को सुनकर नेहरू जी की ओरें भी धूंध गयी थी।

5. मुगल-ए-आजम (1960) का 'प्यार किया तो डरना क्या' दमनकारी शासन के बीच बिद्रोह को स्वर देने वाले इस गीत को नेशनल

राधाकृष्णन और शक्तीवाल बदायूंनी ने इसे लिखा था तथा

मंगेशकर ने इसे अपनी सुरीली आवाज दी थी।

6. ये कौन थी? फिल्म का 'लग जा गले'

मदन मोहन के संगीत और राजा महेन्द्री आली खान

द्वारा लिखे इस गीत को अपनी सुरीली आवाज देकर

मंगेशकर ने इसके बोल अमर कर दिया है।

7. जब जब फूल लिखे (1965) का 'ये समाँ'

नेदा पर फिल्माए इस गाने को मंगेशकर ने बड़ी खूबसूरती से गाया था।

8. गाइड (1972) का 'आज किर जीन की तमाना है' अनुभवी गायिका के इस गीत में आजादी

और मुकिल की अधिकता है और इसमें अभिनेत्री बहीदा रहमान के अभिनय देखा जाता है।

9. गाइड (1972) का 'चलते चलते यूं ही कोइ'

इस फिल्म के ज्यादातर गीतों को मंगेशकर ने

प्रसंगीन देखा जाता है। इस गीत में लोकप्रिय गीत अमिताभ बच्चन और रेखा पर

फिल्माया गया। यह गीत अंतीक गीत गाया था।

चोपड़ा अपनी फिल्मों के लिए दिव्यांग मंगेशकर की गीत है।

10. शोर (1972) का 'एक व्यार का नामा

है' व्यार भरे इस गीत में वायरल की धूमो